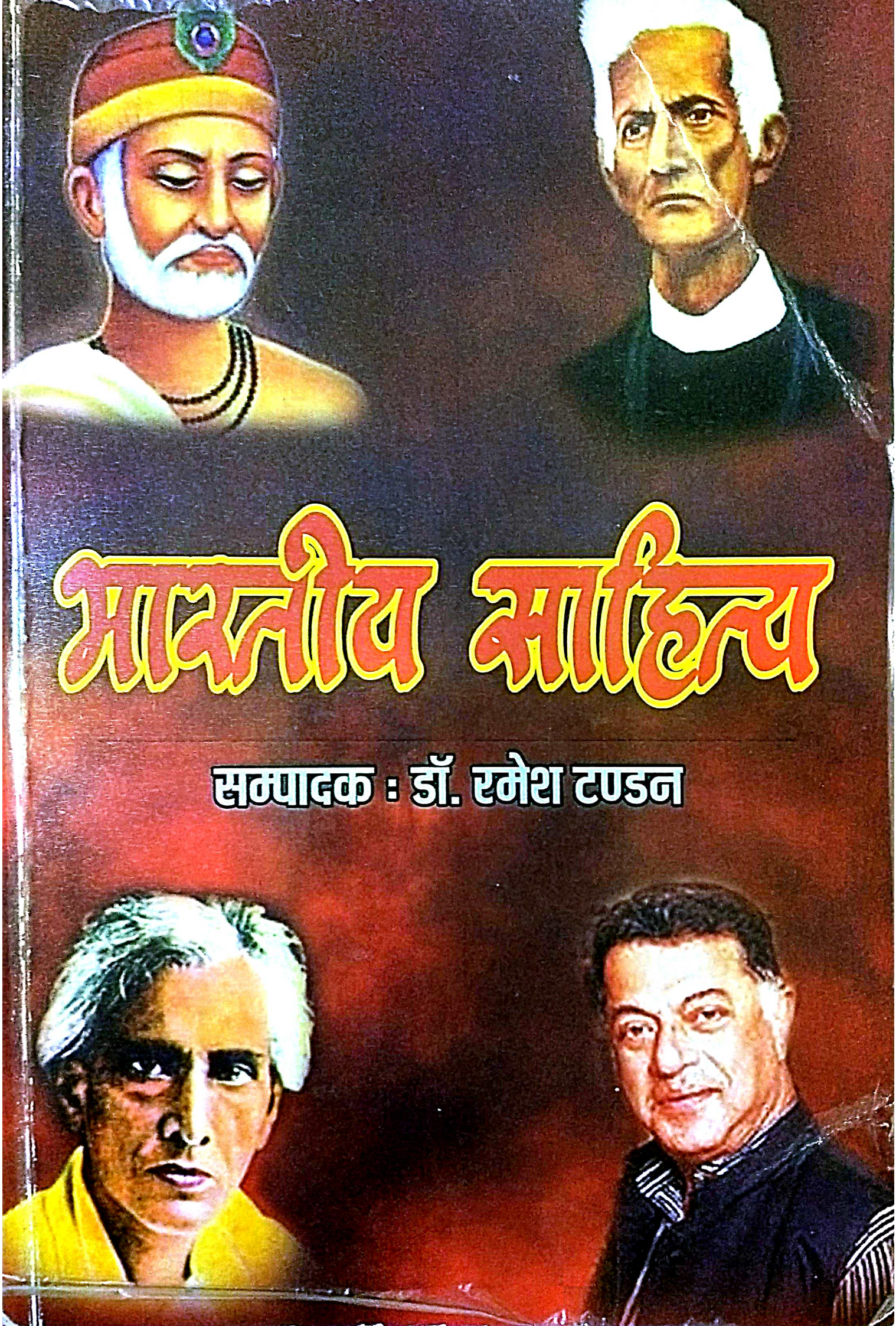

भारतीय साहित्य

सम्पादक : डॉ. रमेश टण्डन

एम. ए. हिन्दी–

भारतीय साहित्य

(तृतीय सेमेस्टर – चतुर्थ प्रश्न–पत्र)

[छत्तीसगढ़ स्थित अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर के अन्तर्गत विभिन्न महाविद्यालयों में संचालित एम. ए. हिन्दी तृतीय सेमेस्टर चतुर्थ प्रश्न–पत्र (भारतीय साहित्य) के नवीनतम सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित एवं अन्य विश्वविद्यालयों के लिए भी एम. ए. हिन्दी की पाठ्य–पुस्तक]

संपादक

डॉ. रमेश टण्डन

(एम. ए.– हिन्दी, अंग्रेजी; पी–एच. डी., सीजी सेट)

विभागाध्यक्ष – हिन्दी

महात्मा गांधी शासकीय कला एवं विज्ञान स्नातकोत्तर महाविद्यालय

खरसिया, जिला– रायगढ़ (छ.ग.)

उप–संपादक

डॉ. बी. नन्दा जागृत – एम. ए. (इतिहास, समाजशास्त्र, हिन्दी), पी–एच. डी. (हिन्दी)

डॉ. दिनेश श्रीवास – बी. एस–सी. (गणित), एम. ए. (हिन्दी), एम. फिल. पी–एच. डी.

डॉ. जयती बिस्वास – एम ए (हिन्दी), एम. फिल,, पी–एच. डी., नेट, सेट, बी. एड., डी. एड.

प्रो. चरणदास बर्मन – एम. ए., बी. एड., स्लेट

प्रो. सीमारानी प्रधान– एम ए (हिन्दी, समाजशास्त्र), सेट

सर्वप्रिय प्रकाशन

कश्मीरी गेट, दिल्ली

भारतीय साहित्य

डॉ. रमेश टण्डन

ISBN- 978-93-89989-85-4

●

प्रकाशक

सर्वप्रिय प्रकाशन

प्रथम मंजिल, चर्च रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली

मो. 9 9425358748

e-mail : sahityavaibhav@gmail.com

www.vaibhavprakashan.com

●

आवरण सज्जा : कन्हैया साहू

प्रथम संस्करण : सितम्बर 2020

मूल्य : 300.00 रुपये

कॉपी राइट : लेखकाधीन

BHARTIYA SAHITYA

BY : DR. RAMESH TANDAN

Published by

Sarvapriya Prakashan

First Floor, Church Road, Kashmiri Gate, Delhi

First Edition : September 2020

Price : Rs. 300.00

(प्रस्तुत पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में लिखित पाठ्य सामग्री उसके लेखक/संकलनकर्त्ता के द्वारा एम ए हिन्दी में अध्ययनरत छात्रों के हित के लिए विभिन्न किताबों अथवा नेट से संकलित की गई है। अपने पाठ की पूर्णता के लिए इस पुस्तक के अध्याय लेखकों के द्वारा मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट से उद्धरण अथवा उदाहरण लिए गए हैं, अतः उन मूल किताबों अथवा परवर्ती संदर्भ/शोध ग्रंथों अथवा नेट के क्रमशः लेखकों अथवा संपादकों/शोध छात्रों अथवा अपलोडर्स का सर्वश्रेष्ठ आभार जिनकी पाठ्य सामग्री को यहाँ उद्धृत किया जा सका है। मौलिक तथ्यों /परिभाषा आदि में फेरबदल के लिए इस पुस्तक के संपादक अथवा प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होंगे अपितु अध्याय लेखक स्वयं जिम्मेदार होंगे तथा किसी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र खरसिया (छ.ग.) होगा।)

अनुक्रम

क्र.	अध्याय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1.	भारतीय साहित्य का स्वरूप	प्रो. सीमारानी प्रधान	11
2.	भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ	डॉ. श्रीमती वी. नंदा जागृत	21
3.	भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब	डॉ. रमेशकुमार टण्डन	31
4.	भारतीयता का समाजशास्त्र	प्रो. सीमारानी प्रधान	42
5.	हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति	डॉ. जयती बिस्वास	56
6.	बँगला भाषा के साहित्य का इतिहास	डॉ. दिनेश श्रीवास	81
7.	उड़िया भाषा के साहित्य का इतिहास	डॉ. दयानिधि सा	95
8.	बँगला भाषा के साहित्य के प्रमुख कृतिकारों का परिचय तथा महत्वपूर्ण कृतियाँ	प्रो. करुणा गायकवाड़	110
9.	उड़िया भाषा के साहित्य के प्रमुख कृतिकारों का परिचय तथा महत्वपूर्ण कृतियाँ	डॉ. दयानिधि सा	122
10.	वंगला साहित्य, उड़िया साहित्य और हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. दिनेश श्रीवास	144
11.	गिरीश कर्नाड का परिचय एवं हयवदन की कथावस्तु	प्रो. करुणा गायकवाड़	161
12.	हयवदन की समीक्षा	डॉ. देवमाईत मिंज 'देव लकड़ा'	169
13.	हयवदन के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण	डॉ. देवमाईत मिंज 'देव लकड़ा'	173

———000———

6.

बँगला भाषा के साहित्य का इतिहास

– डॉ. दिनेश श्रीवास *

सेमेस्टर – III, प्रश्नपत्र– IV (भारतीय साहित्य), इकाई 02

बंगला भारोपीय भाषा परिवार की भारतीय–ईरानी शाखा से संबंधित भाषा है। मागधी अपभ्रंश के पूर्वी रूप से बंगला का विकास हुआ है। बंगला पूर्वोत्तर क्षेत्र की भाषाओं में सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रचलित भाषा है। यह बंगाल प्रदेश की राजभाषा तथा बांग्लादेश की राष्ट्रभाषा है। इसके अतिरिक्त यह म्यांमार, वर्मा आदि देशों में बोली जाती है। बंगला भाषा की कई उपशाखाएँ हैं, जिनमें पश्चिमी और पूर्वी शाखाएँ मुख्य हैं। पश्चिमी बंगला भाषा का केंद्र कोलकाता है तथा पूर्वी बंगला का केंद्र ढाका (बांग्लादेश) है। हिंदी के समान बंगला भाषा में संस्कृत शब्दों की भरमार है। मैथिली, बिहारी, असमिया तथा उड़िया भाषा पर इसके भाषागत और साहित्यिक स्वरूप का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। भारत में पाश्चात्य विचारधारा का सर्वप्रथम प्रभाव बंगला साहित्य पर ही दिखाई पड़ता है। बंगला भाषा की अपनी लिपि है।

बंगला भाषा के साहित्य का उदय और विकास –

जनता की चित्तवृत्ति को समझने वाले मनीषियों–संतो की भक्तिपरक वाणियों में बंगला साहित्य के बीज मिलते हैं। हरप्रसाद शास्त्री द्वारा खोजे गए अभिलेख (जिसे उन्होंने नेपाल से प्राप्त किया) भी इस बात की पुष्टि

*जन्म : 10 दिसम्बर 1977, बिलासपुर (छ.ग.), माता : श्रीमती आशा देवी, पिता : श्री गणेश श्रीवास, शिक्षा : बी.एस–सी. (गणित), एम.ए. (हिन्दी), एम.फिल. (हिन्दी), पी–एच.डी. सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक / शोध निदेशक (हिन्दी), शा. इंजी. विश्वेश्वरैया महाविद्यालय कोरबा, छ.ग., आवास : ए–71, रामायीन सिटी, बिलासपुर (छ.ग.), मोबा. नं– 7770899636, 7974698680, Email ID: dineshsriwash77@gmail.com